स्वागत-प्रवचन मार्तंड (कश्मीर) १०-८-'५९

मैं जनता-जनार्दन के दर्शनों के लिए यात्रा कर रहा हूँ

हमारी यात्रा आठ साल से चल रही है। 'मार्तंड' एक यात्रा का स्थान है। यहाँ 'अमरनाथ' जानेवाले यात्री ठहरते हैं। अक्सर लोग काशी, बद्रीकेदार, अमरनाथ, रामेश्वर की यात्रा करते हैं। हमारी यात्रा उन स्थानों में भी होती है। लेकिन हिंदुस्तान में जितने गाँव हैं, जहाँ हमारे भाई रहते हैं, वे सब हमारे लिए यात्रास्थान हैं। हम उन सबके दर्शनों के लिए यात्रा कर रहे हैं।

मानव-देह ही मंदिर है

हमें यहाँका मंदिर* बताया जायगा, जो तोड़ा गया है। लेकिन हम सिर्फ उसीको मंदिर नहीं मानते। हम मानते हैं कि अपना देह, जिस्म भी एक मंदिर ही है, जिसमें भगवान विराजमान हैं। इससे बेहतर मंदिर हमने नहीं देखा। हमने बहुत बड़े-बड़े मंदिर देखे हैं। मदुरा में मीनाक्षी का आलीशान खूबसूरत मंदिर है, जिसमें हज़ार खम्भोंवाला मंडप है, लेकिन उन-सब मंदिरों से ज्यादा खूबसूरत परमात्मा का कोई मंदिर है तो यह मनुष्य देह ही है। इसमें जो रोशनी रोशन होती है, वह दूसरे किसीमें नहीं होती। हम तो इसीके दर्शन के लिए घूमते हैं।

यह कैसी भक्ति ?

हम सबको यही बात समझा रहे हैं कि तुम परमात्मा के भक्त बनना चाहते हो तो एक-दूसरे पर प्यार करो। इन्सान का इन्सान पर प्यार न हो, अदावट हो तो अल्लाह उसकी इबादत हर्गिज कबूल नहीं करेगा। वह कहेगा कि तुम मेरे भक्त कहलाते हो तो एक-दूसरे पर प्यार क्यों नहीं करते ? अल्लाह 'अलू गैब' अव्यक्त है, जो दीखता नहीं, उसपर तुम प्यार करने का दावा करते हो, लेकिन जिनको देखते हो, जो अल्लाह की ही संतान हैं, उनपर प्यार नहीं करते हो तो वह कैसी भक्ति हुई ? हम कहते हैं कि तुम्हारे देह-मंदिर में जो भगवान विराजमान हैं, उनकी तुम पूजा करो। दुनिया में जो इन्सान है, फिर वह चाहे जिस मजहब का, जाति का, जबान का या सूबे का हो, उसपर हमारा उतना ही प्यार होना चाहिए, जितना हमारे इस जिस्म पर है। एक-दूसरे पर प्यार करने के लिए ही हम कहते हैं कि जमीन की मिलकियत मिटाओ, जमीन सबकी बनाओ, हम जितने भी काम करते हैं, सब प्यार बढ़ाने के लिए। अल्लाह की इबादत के लिए करते हैं।

चलने का सबब

हमारे परमात्मा हर जगह मौजूद हैं, इसलिए हम पैदल यात्रा करते हैं। एक भाई ने हमसे पूछा कि आप इस हवाई-जहाज, रेल, मोटर के जमाने में पैदल क्यों घूमते हो ? हमने उसे जवाब देते हुए मजाक में कहा कि हम हवाई जहाज में घूमते तो हमें हवा ही मिलती, जमीन नहीं। लेकिन उसका असली जवाब यह है कि हम यात्रा के लिए निकले हैं। इसलिए हम घोड़े पर बैठेंगे तो सारा सवाब (पुण्य) घोड़े को ही मिलेगा, हमको नहीं। पुण्य हमें मिले, इसलिए हम पैदल चलते हैं। यह अक्ल हमें आठ साल पहले सूझी थी, लेकिन कश्मीर में हमें और एक अक्ल सूझी कि हमें अपना निजी सामान भी खुद उठाना चाहिए। हाँ, किताबें वगैरह दूसरी चीजें मोटर से जा सकती हैं। आप हमें कन्धे पर बोझ उठाये हुए देख रहे हैं, जो हम पहले नहीं उठाते थे। इस तरह इस बुढ़ापे में हमें नये-नये विचार सूझते हैं, हम नया-नया बोझ उठाते हैं। लेकिन जबसे हमने यह बोझ उठाया, तबसे हमें आराम महसूस हुआ। सरस्वती को 'कश्मीरपुरवासिनी शारदा' कहा जाता है। इसलिए कश्मीर में ही उसने हमें यह अक्ल सुझायी कि हम अपना सामान खुद ढोयें। ऐसा करने से ही सच्ची यात्रा होगी। यह बोझ उठाने से हमारी बुद्धि पर जो बोझ था, वह हट गया और हमें नये विचार सूझे।

हम सवाब बाँटना चाहते हैं

अब हमें इस यात्रा का पूरा सवाब मिलेगा। लेकिन हम वह सवाब लेना नहीं चाहते हैं, आप सबमें बाँटना चाहते हैं। पाप और पुण्य दोनों बाँटना चाहते हैं। सवाब का भी बोझ उठाना नहीं चाहते। जो भाई दान देंगे, उन्हें हम यह सवाब खैरात में बाँट देंगे और दान लेनेवालों को भी बाँटेंगे। सवाब के हम तीन हिस्से करेंगे। उन्हें हम दान देनेवालों में, लेनेवालों में और दिलानेवालों में बाँट देंगे।

मार्तण्डवालों से

यह 'मार्तण्ड' है। यहाँ 'सूर्य-मन्दिर' है। सूर्य नारायण दुनिया को रौशन करते हैं। इसलिए यहाँसे दुनिया में रौशनी फैलनी चाहिए। 'मार्तण्ड' में ऐसा कोई अभागा न रहे, जिसने दान न दिया हो। अगर हर घरवाला कुछ न कुछ देगा तो 'मार्तण्ड' से कश्मीर में, हिन्दुस्तान में और दुनिया में प्यार की रौशनी फैलेगी।

मेरी यह जो यात्रा आठ साल से चल रही है, वह इसीलिए कि लोग प्रेम से दें। हमारा यही काम है कि हम जनता के पास प्यार का पैगाम लेकर पहुँचते हैं और उसे दान देने के लिए प्रेरित करते हैं। जनता-जनार्दन का दर्शन करना और उसे विचार समझाना, यही मेरी जियारत, यात्रा का मकसद है। ◆◆◆

*'मार्तंड' एक प्राचीन स्थान है, जहाँपर आठवीं शताब्दि में ललिता दिव्य राजा ने एक विशाल सूर्य-मंदिर बनाया था, जिसे सोलहवीं शताब्दि में 'बुतशिकंद' सिकंदर ने तोड़ा। मार्तंड में उसके खंडहर अभी भी मौजूद हैं।

अनुक्रम

१. गरीबों के साथ समरस होने में ही आनंद है.
अनंतनाग १८ अगस्त '५९ पृष्ठ ६५९
२. देना इन्सानियत की माँग है, रूहानियत की माँग है...
बरीत २९ अगस्त '५९ ,, ६६०
३. मैं जनता-जनार्दन के दर्शनों के लिए यात्रा कर रहा हूं.
मार्तण्ड १० अगस्त '५९ ,, ६६२

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी

www.vinoba.in